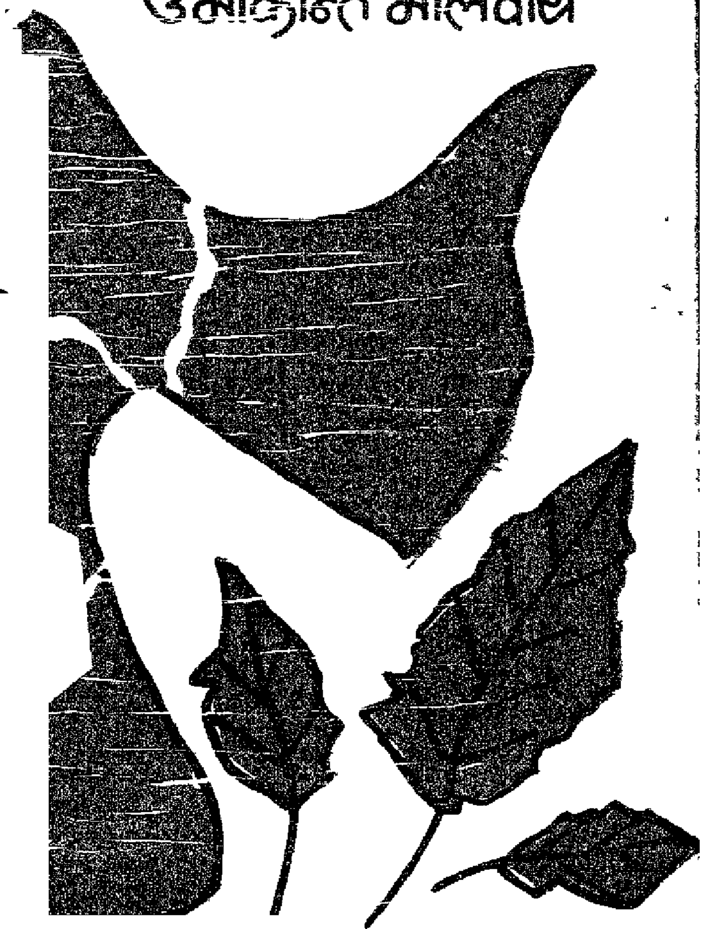
टुकड़ा टुकड़ा औरत

उमाकान्त मालवीय



उमाकान्त जी की इन कहानियों को पढ़कर जो शंकाएँ जन्म लेती है उन्हे यह कहकर टाला नहीं जा सकता कि इस संदर्भ में कोई वकालत नहीं की जानी चाहिए। क्योंकि वकालत या तर्कों से चीजों को खँगालने से बचना पलायन का पर्याय होता है। समुद्र को खँगालकर अमृत और विष दोनों ही निकलते हैं। इसे कौन नहीं जानता।

जो उदर में है- गड़बड़ी पैदा कर रहा है, पीड़ा का कारण है चिकित्सक उसके लिए एनीमा देता है। अरस्तू जैसा आचार्य ऐसे प्रसंग पर विरेचन सिद्धांत की स्थापना करता है। और भारतीय दर्शन सत्कार्यवाद की नींव रखता है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' के उद्घोष में 'यत्र' और 'तत्र' पद पादपूर्ति के निमित्त नहीं हैं। अतः जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता वहाँ देवता नही राक्षस बनते है' इस वस्तुगत अर्थ को ध्यान में रखकर ही उमाकान्त जी ने अपने तीसरे नेत्र से सबकुछ देखा और तब कहा—यह स्पष्ट करना जरूरी है।

यह समझना भी जरूरी है कि इन पुराकथाओं में नारी को प्रताड़ित करने के परिणाम से बचा नहीं जा सका है। महाभारत इसका सबसे जीता जागता परिणाम है।

सत्-असत्, गुण-दोष, उचित-अनुचित और प्रकारान्तर से पुण्य-पाप सार्वकालिक और सार्वभौम हैं। मानव मात्र मे, चाहे वे सतयुग-त्रेता-द्वापर या कलियुग के हों उनमें इन तत्वों की सत्ता कम ज्यादा तो हो सकती है पर होगी जरूर।

ये कथाएँ 'हमें ऐसा नहीं करना चाहिए' या 'समाज में ऐसा नही होना चाहिए' का संदेश देती हैं और विरेचन सिद्धान्त की पृष्ठभूमि में कर्म-फल सिद्धान्त की ही व्याख्या करती दिखाई देती हैं।